## दिनांक 26 जून, 1987

स. श्रो. वि. सोनी/51-87/25036.-- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० एटलस साईकिल इण्डस्ट्रीज लि०, सोनीपत, के श्रामिक श्री प्रताप सिंह, पुत्र श्री जय सिंह, मार्फत भारतीय मजदूर संघ कार्यालय, सोनीपत, तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं,

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रीधसूचना की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, कोविवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो थित्रादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित है।

क्या श्री प्रताप सिंह की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं ही कार्य से गैर-हाजिर रह कर नौकरी से अपना पुनर्ग्रहणाधिकार (लियन)/खोथा है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं. स्रो. वि. सोनी $\sqrt{52-87/25043}$  — चूिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० एटलस साईकिल इण्डस्ट्रीज लि०, सोनीपत, के श्रीमक श्री रमेश चन्द्र, पुत्र श्री कंवर सिंह, मार्फत भारतीय मजदूर संघ कार्यालय, सोनीपत, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

ग्रौर च्िह हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिगंय हेतू निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इसलिए, अब, ब्रांघोलिक वियाद श्रोधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपबारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक, 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रीधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायलय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे, सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित हैं:---

क्या श्री रमेण चन्द्र की सेवा समान्त की गई है या उसने स्वयं ही कार्य से गैर-हाजिर रह कर नौकरी से श्रपना पुनर्यहणांधनार (लियन) खोया है ? इस बिन्द पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 29 जुन, 1987

सं मो. वि. हिमार/85-87/25243.--वृंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वि निर्देशका, केन्द्रीय राज्य फार्म (सैण्टर स्टेंट फार्म), हिमार के श्रीमक श्री मंगल सिंह, पुन्न श्री सन्तु सिंह अकुशल श्रीमक, गांव व डावजुगलान, तह व जिब हिसार, तथा उसके प्रवन्धकों के बीच हममें इसके बाद लिखित मामलें में कोई औद्योगिक विवाद है;

ग्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपात विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिश्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, ब्रांद्योगिक विवाद ब्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग वारने हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ब्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी ब्रधिसूचना की धारा 7 के ब्रधीन गठित श्रम न्यायलय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन् मास में देने हेनु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उद्या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित हैं:—

> नया श्री मभल सिंह, श्रुकुशल श्रामिक, की सैवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-हाजिर हो कर नौकरी से लियन खोया है ? इस बिन्द के निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो. वि. श्रम्बा/51-87/25250---चूंकि हरियाणा राज्यपाल की राय है कि मैं०(1)निदेशक, विद्यालय शिक्षा, हरियाणा, 30 द्रेज बिल्डिंग, सैंक्टर 17, चण्डीगढ़, (2) मुख्य श्रध्यापक, राजकीय उच्च-दिद्वालय विजलपुर, तह० व जि०, श्रम्बाला के श्रमिक श्री भ्रशोक कुमार, स्वीपर, पुत्र श्री माम चन्द, गांव विजलपुर, तह० व जि० श्रम्वाला, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई स्रोद्योगिक विवाद है ;

ग्रौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिये, ग्रव, ग्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3 (44) 84-3 श्रम दिनांक 17 ग्रिप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथचा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री अशोक कुमार, स्वीपर, की सेवा समाप्ति/छांटी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 14 जुलाई, 1987

सं. भ्रो. वि. एफ.डी. | 69-87 | 27128 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । इलैक्ट्रोनिक्स लि., एन. भ्राई. टी. फरीदाबाद, के श्रमिक श्री प्रेम प्रकाश, पुत्र श्री कर्म सिंह, 2-सी | 26-ए, एन ग्राई. टी. फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसकें बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई सक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रिधितियम की धारा 7क के श्रधीन गठित श्रीद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमकों के बीच या तो विवादयस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसगत, या सम्बन्धित मामला/मामलले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री प्रेम प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो. वि. एफ.डी. 73-87 27135. - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटिड, एन. आई. टी. फरीदाबाद, के श्रीमक श्री महिन्द्र सिंह, मार्फत राजपूत साईकल वर्कस, गुरुद्वारा रोड़, जवाहर कालोनी, एन ग्राई. टी. फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक, विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7क के श्रधीन गठित श्रीद्योगिक ग्रिधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री महिन्द्रे सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो वि. एफ.डी. /74-87/27142. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय हैं कि मै० इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटिड ,एन. स्राई.टी. फरीदाबाद, के श्रमिक श्री रत्न सिंह, पुत्र श्री राम सरूप सिंह, मार्फत राजपूत साईकिल वर्कस, गुरुद्वारा रोड़, जवाहर कालोनी, एन. ब्राई. टी. फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित <mark>मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक</mark> विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 क के ग्रिधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/ मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री रत्न सिंह, पुत्र श्री राम सरूप सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक हैं? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि एफ,डी./गुड़गांव/125-87/27150--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० केफकों, दौलताबाद रोड़,गुड़गांव, केश्रमिक श्री प्रयाग यादव, पुत श्री कान्ता यादव, मार्फत श्री महाबीर त्यागी, भौरगेनाईजर, इण्टक, दिल्ली रोड़, गुड़गांव, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रौद्योगिक श्रिधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हें तु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्याश्री प्रयाग यादव की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि. एफ.डी./गुड़गांय/123-87/27157.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० कैफको, दौलताबदि रोड़, गुड़गांव, के श्रमिक श्री लोरिक सिंह, पुत्र श्री राम सिंगार, मार्फत श्री महाबीर त्यागी, ग्रौरगेनाईजर, इल्टक, दिल्ली रोड़, गुड़गांव, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है:

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित औद्यो-गिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेंतु निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री लोरिक सिंह की सेवा समाप्ति न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि. एफ.डी./गुड़गांव/127-87/27164--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० केफको, दौलताबाद, रोड़, गुड़गांव, के श्रमिक श्री चन्द्र भान, पुत्र श्री कांशी राम मार्फत श्री महाबीर त्यागी, श्रीरगेनाईजर इंटक, दिल्ली रोड़, गुड़गांव, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस वाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायानिर्णय हैत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित भौद्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादगस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हैं तु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री चन्द्र भान, पुत्र श्री कांशी राम, की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहृत का हुकदार है ?